Raga of the Month December 2022 Raga Sureshwari राग सुरेश्वरी

राग सुरेश्वरी यह एक अप्रचलित राग है। इस रागका सृजन आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकरजीने किया है। उन्हीके किताब "अभिनव गीत मंजरी"के भाग ३ में इस रागका वर्णन किया है। उस किताबमें उन्होंने दो बंदिशे, होरी धमार और स्वरविस्तार दिया है। इस रागकी निर्मिति थाट परिवर्तन करनेसे हुई है। राग बागेश्रीका स्वरूपको कायम रखते हुए केवल गंधार तथा निषाद स्वरोंको तीव्र स्थानमे रखते हुए सुरेश्वरीका राग स्वरुप स्पष्ट हो जाता है। रागके आरोहमे रिषभ स्वर वर्ज्य एवं आरोह तथा अवरोहमे पंचमका प्रयोग अल्प मात्रामे किया जाता है।

इस रागकी उत्पत्ति खमाज थाटके अंदर मानी गयी है। राग सुरेश्वरीमे सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। तो फिर सुरेश्वरीको बिलावल थाटके बजाय खमाज थाटमें क्यूँ रखा है, ऐसा सवाल मनमें आ सकता है। स्वर विस्तारसे हम देखते हैं की राग सुरेश्वरीमे म ध नि सां नि ध , म प ध म ग , सा ग म ध म ग स्वर संगती प्रधान रूपसे आती हैं और वादी मध्यम है। ये सब स्वर संगती खमाज अंगकी निदर्शक हैं। इसी कारन रागांग प्रधानत्व ध्यानमे रखते हुए राग सुरेश्वरीका वर्गीकरण खमाज थाटमें किया है।

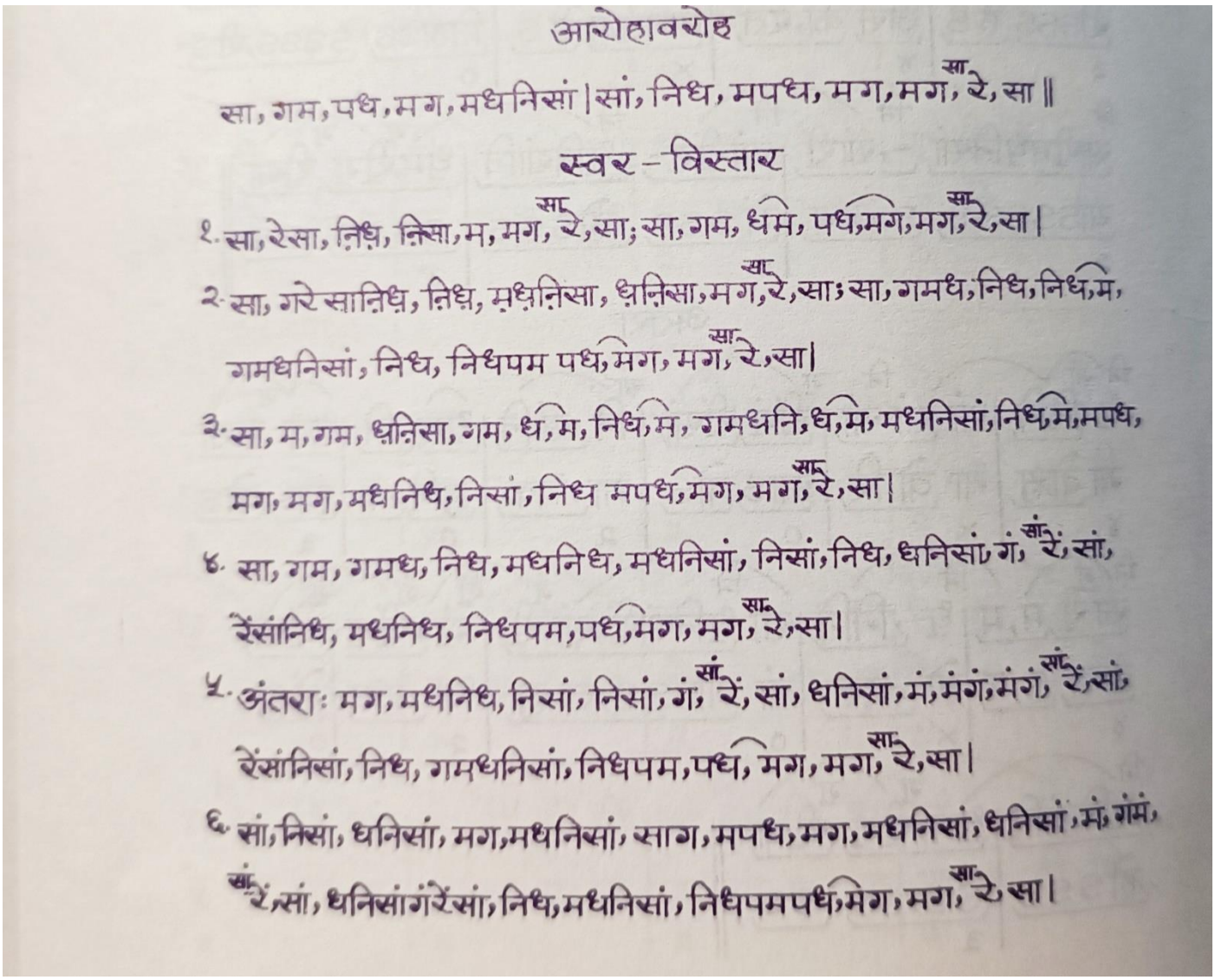

आरोहावरोह

सा, गम, पध, मग, मधनिसां | सां, निध, मपध, मग, मग, सा रे, सा ||

स्वर – विस्तार

१. सा, रेसा, ऩिध़, ऩिसा, म, मग, सा रे, सा; सा, गम, धमे, पध, मग, मग, सा रे, सा |

२. सा, गरेसाऩिध़, ऩिध़, म़ध़ऩिसा, ध़ऩिसा, मग, सा रे, सा; सा, गमध; निध, निधमे, गमधनिसां, निध, निधपम पध, मेग, मग, सा रे, सा |

३. सा, म, गम, ध़ऩिसा, गम, ध, म, निध, मे, गमधनि, ध, म, मधनिसां, निध, मे, मपध, मग, मग, मधनिध, निसां, निध मपध, मेग, मग, सा रे, सा |

४. सा, गम, गमध, निध, मधनिध, मधनिसां, निसां, निध, धनिसां, गं, सां रें, सां, रेंसांनिध, मधनिध, निधपम, पध, मेग, मग, सा रे, सा |

५. अंतरा: मग, मधनिध, निसां, निसां, गं, सां रें, सां, धनिसां, मं, मंगं, मंगं, सां रें, सां, रेंसांनिसां, निध, गमधनिसां, निधपम, पध, मग, मग, सा रे, सा |

६. सां, निसां, धनिसां, मग, मधनिसां, साग, मपध, मग, मधनिसां, धनिसां, मं, गंमं, सां रें, सां, धनिसांगंरेंसां, निध, मधनिसां, निधपमपध, मेग, मग, सा रे, सा |

७. तानें: सागमग मगरेसा, सागमध मधमग मगरेसा, सागमध मधनिध निधमपधमग मगरेसा, सागमध मधनिसां धनिसांगं मंगंरेंसां रेंसांनिसांनिध मधनिसांनिधपम पधमग मगरेसा।

८. मगमगरेसा, धमधमपधमग मगरेसा, निधनिधपमपधमग मगरेसा, ध़ऩिसाम गमधम धनिसांमं गंमंगंरेंसां रेंसांनिध मधनिसांनिध मधनिध मपधमग मगरेसा।

९. सागमग सागमधम गमनिध मधनिसांनि धनिसांगं सांगंमंगं मंगंरेंसां, निसांरें धनिसां पधनि मपधमग, सागमधनिसां मंगंरेंसांनिधपम, निसागमधनि सांनिधपमग मगरेसा।

आजके <u>ऑडियोमें</u> हम आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकरजी रचित विलम्बित और मध्यलयमे रचना और होरी धमार सुनेंगे, जो उनके शिष्य पंडित के जी गिंडेजीने गायी हुई है।

<u>संदर्भ</u> : "अभिनव गीत मंजरी" भाग ३,

<u>आभार</u> : पंडित यशवंतबुवा महाले, श्री अजय गिंडे;

१-१२-२०२२